# Reflection

# माँ की भूमिका

शक्ति माथुर

माता पिता बनना ईश्वर की सबसे बड़ी नियामत है। माँ बनना एक सुकून भरी अनुभूति का परिचय देती है। माता पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं। घर और परिवार में रहकर ही बच्चा बहुत कुछ सीखता है। जो संस्कार बच्चे में आते हैं वह परिवार में रहकर निर्मित होते है। परिवार में रहकर सहयोग की भावना आती है। माँ के स्नेह और दुलार से भावनात्मक सम्बन्ध विकसित होते हैं। माँ का दिल इतना बड़ा होता है कि उसमें दु:ख और खुशियाँ समां जाती हैं। जिस घर में माँ होती है उस घर को स्वर्ग कहते हैं। जब बच्चा घर में आता है तो माता पिता अपनी दु:ख और परेशानिओं को भूलकर उसकी सेवा में लग जाते हैं, जिससे उनको खुशी का अनुभव होता है। माता पिता से संतान को जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह अमूल्य है, उसकी तुलना किसी भी वस्तु से नहीं कर सकते। माँ की ममता और स्नेह तथा पिता का अनुशासन किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

किसी भी मनुष्य को उसके जन्म से लेकर उसे पैरों पर खड़ा करने में माता पिता की मुख्य भूमिका होती है। माता–पिता को किन–किन कठिनाईयो से गुजरना पड़ता है, इसका वास्तविक अनुमान सम्भवत: स्वयं माता – पिता बनने के उपरांत ही लगाया जा सकता है। जब बच्चा इस संसार में आया है तो माता – पिता पर उसके अच्छी परवरिश की पूरी जिम्मेदारी होती है। आज संसार में बच्चे का जो भी अस्तित्व है, उसका श्रेय माता – पिता को ही जाता है। इस दृष्टि से माता – पिता सदैव पूज्यनीय होते हैं। कितने कष्टों को सहकर माता बच्चे को जन्म देती है, उसके पश्चात् अपने स्नेह रूपी अमृत से सींच कर उसे बड़ा करती है। माता – पिता के स्नेह और दुलार से बालक को मानसिक बल प्राप्त होता है।

काफी साल पहले एक परिचित महिला मेरे सम्पर्क में आयीं। वह काफी परेशान थीं। उन्होंने बताया कि बच्ची को पढ़ाई में मुश्किल आ रही है। उन्होंने बताया कि उनकी बच्ची समय से पहले हो गई थी (Premature)। बच्ची के होने से पहले उनका B.P. ज्यादा हो गया था और डाइट कम होने की वज़ह से बच्ची का वजन बहुत कम था। उन्होंने बच्ची का नाम रिया बताया। जन्म के समय उसका वजन 1 किलो ३०० ग्राम था। उसको 3 दिन तक Incubator में रखा था। इतनी कमज़ोर होने की वजह से मिमक भी नहीं ले पाती थी। रिया की नाक में पाइप लगा रखी थी, जिससे उसको feed देते थे। रिया के होने के बाद उसको डेढ़ महीने तक अस्पताल में रखा गया। जब रिया को घर लाया गया तो उसके साथ यह बड़ी मुश्किल थी कि feed लेती थी, उसके बाद उल्टी कर देती थी और फिर खाली पेट होने की वजह से रोना शुरू कर देती थी । ऐसी परिस्तिथि में इतने कमज़ोर बच्चे की परवरिश करना बहुत मुश्किल था । जब उसको घर लाए तो उससे पहले एक डॉक्टर ने 2 दिन तक कुर्सी पर बैठा कर रखा क्योकि डॉक्टर का सोचना था कि सीधे बैठने से उल्टी की समस्या बंद हो जायगी। लेकिन उसका गलत ही परिणाम निकला जिससे उसके हाथ पैर टेढ़े हो गए थे । पर ईश्वर की कृपा से रिया की नानी को मालिश करनी बहुत अच्छी आती थी । वे घर पर रोज मालिश करने आतीं थीं । यह उनके

परिश्रम का फल था कि रिया के हाथ पैर ठीक हो गए । ऐसे मुश्किल समय में रिया की मम्मी ने हिम्मत और हौसला नहीं छोड़ा । उन्होंने पूरी लगन से उसकी सेवा की और अच्छी परवरिश दी । वे रिया के होने पर खुद को मुक्कमल मानती है, अपने रब के बाद, अपनी बच्ची को मानती थी ।

जब वह मेरे पास आयीं तो उनकी बच्ची तीसरी कक्षा में पढ़ती थी । यहाँ तक रिया किसी तरह से पास होती आई लेकिन जैसे–जैसे बड़ी क्लास हुई पढाई में मुश्किलें बढ़ती गई । मेरा शिक्षा विभाग में मनोविज्ञान से सम्बन्ध होने की वजह से उन्होंने सोचा शायद मैं कुछ उनकी मदद कर सकूँ । रिया की मम्मी को समझ में नहीं आता था कि रिया के साथ इतनी मेहनत करने के बावजूद भी उसकी performance बहुत अच्छी नहीं थी ।

तब मैंने रिया की मम्मी को सलाह दी कि वह उसका I.Q. परिक्षण करा लें । इसके पश्चात् उन्होंने काफी प्रयत्न किए और डॉक्टर से सलाह लेकर I.Q. परिक्षण कराया । जिसमे पता लगा कि रिया को "Dyslexia" की समस्या है । तब मैंने बताया की यह मुश्किल पढ़ाई से सम्बन्धित होती है । रिया बहुत फुर्तीली बच्ची थी । मैंने उन्हें बताया कि इसमें बच्चे को पढ़ने, लिखने, समझने, वर्ण विन्यास, वर्तनी, अक्षर विन्यास (Spelling) और हिसाब से सम्बन्धित समस्याएं होती हैं । इस सम्बन्ध में मैंने कुछ बातें बताई जिसका ध्यान रखना बहुत जरुरी है, जो निम्नलिखित हैं :–

- बच्चों को शब्दों और वर्णमाला की अच्छी तरह से पहचान होनी चाहिए ।
- Clay game, Magnetic Alphabet, Scrabble game, श्यामपट (Blackboard) का प्रयोग करना चाहिए और Florocent Colour – इसका प्रयोग करने से शब्द उभर कर आते है।
- लिखते समय पेपर सीधा रखना चाहिए द्य पेंसिल और पेन को अंगूठे, मध्यमा उंगली (Middle finger) के बीच में रखकर तर्जनी उंगली (Index finger) से जोर लगाना चाहिए।
- किसी भी विषय में उपविषय के बारे में पढ़ाते वक्त, उस विषय को बार – बार दोहराने से वह चीज़ बच्चे के दिमाग में बैठ जाती है द्य
- जिस विषय को याद कर रहे हो, उसे लिखकर याद करें ।
- ऐसे बच्चों को कभी भी पूरा पाठ्यक्रम (Syllabus) नहीं कराना चाहिये । जो परीक्षा के हिसाब से मुख्य प्रश्न लगते हैं, उन्हीं पर फोकस करना चाहिए द्य
- पिछले सालों के पेपर लेकर, जो प्रश्न बार – बार दोहराए जा रहें है, उनकी एक सूची बना लें । परीक्षा को ध्यान में रखते हुए उन्हीं प्रश्नों को कराएं । इससे 50 % पाठ्यक्रम cover हो जाता है।
- ऐसे बच्चों को सही शब्दों को लिखने में मुश्किल आती है । ऐसे शब्दों की सूची बनाना, जिन शब्दों को लिखने में गलतियां करता है और बच्चे को सही शब्द सिखाना ।
- सही वर्तनी सिखाने के लिए उसको श्यामपट या पेपर पर लिखें और बच्चे से कहें कि वह सही शब्द का उच्चारण करे और उसकी तुलना उस शब्द से करे जो उसने लिखा है । उच्चारण को दोहराने को कहें ।
- बच्चे को यदि पढ़ने में मुश्किल आती है तो अध्यापक द्वारा पढ़ी हुई या स्वयं माता–पिता उस सही reading को CD अथवा फ़ोन में

रिकॉर्ड करके बच्चे को सुनाएं और बताएं कि किस तरह से पढ़ना है ।

रिया की मम्मी ने इन कुछ बातों का अनुसरण किया और इसके साथ ही मैंने उन्हें सलाह दी कि बच्चे के सन्दर्भ में अध्यापकों से बार–बार मिलना चाहिए । इससे अध्यापकों को यह लगा की रिया की माँ रिया के लिए बहुत ज्यादा परिश्रम कर रहीं हैं । इसका प्रभाव यह हुआ कि अध्यापकों नें भी रिया के प्रति रूचि दिखाना शुरू कर दिया । इस सन्दर्भ में मैं रिया की मम्मी के साथ कई बार स्कूल भी गई । आरम्भ में अध्यापकों और प्रधानाचार्या इस बात को मानने को तैयार नहीं थे कि बच्ची को इसी स्कूल में रखा जाए । वह यही कहतीं थीं कि बच्ची पढाई में कमजोर है इसलिए रिया को विशेष स्कूल (special school) में डाला जाए । लेकिन मेरे बहुत प्रयास करने के बाद, वह इस बात के लिए तैयार हो गए कि रिया को इसी स्कूल में ही रखा जाएगा ।

ऐसे बच्चों के लिए लोग उम्मीद छोड़ देतें हैं और उस बच्चे के ऊपर ध्यान नहीं देतें हैं । वे समझतें हैं कि बच्चा ही लापरवाह है । रिया की मम्मी नें रात–दिन एक करके उसको दसवीं तक पहुँचाया । बारहवीं की परीक्षा में रिया नें 75% प्राप्त किए और राजनैतिक विज्ञान (political science) में प्रथम स्थान लेकर 84 अंक लेकर पास हुई जिसके लिए उसको shield और प्रशस्तिपत्र (certificate) मिला । रिया की मम्मी नें उसकी पढ़ाई के लिए बहुत परिश्रम किया । रिया की खुशियों के पीछे उसकी माँ की अनगिनत खुशियों का परित्याग निहित था । रिया की मम्मी हमेशा उसके साथ लगी रहतीं थीं । रिया को इससे प्रोत्साहन मिला और आत्मविश्वास बढ़ा । जहाँ उसकी मम्मी ने बिल्कुल उम्मीद छोड़ थी, वह उसके लिए मेरी शुक्रगुजार थीं । रिया ने आगे की पढ़ाई जारी रखी और दिल्ली विश्वविद्यालय में B.A. (Program) में प्रवेश लिया और कॉलेज में भी 56% से पास हुई । इस समय तक रिया का आत्मविश्वास काफी बढ़ चुका था। जहाँ एक समय था कि कक्षा में सबसे अलग और चुप बैठी रहती थी । इस समय उस बच्ची में मनोबल की कमी नहीं थीद्य इसके लिए रिया की मम्मी ने काफी मेहनत की जिसका फल उनके सामने आ गया । इसके साथ रिया की माँ ने कला और Computer को भी बढ़ावा दिया । रिया बहुत अच्छा Art और Craft का काम करती है और वह इस क्षेत्र में परांगत है ।

इस तरह अंत में मैं यह कह सकती हूँ कि जिन बच्चों को 'Dyslexia' की समस्या है, अगर सही वातावरण और भावनात्मक सहारा दिया जाए तो वह इस समस्या से उभर सकता है । इस सम्बन्ध में रिया की माँ की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है । इस सम्बन्ध में रिया की माँ ने सरहानीय कार्य किया द्य सच्चे मन से माँ का कर्तव्य निभाया है ।